॥ श्रीहरिः ॥ 1185

श्रीशिवचालीसा

ॐ नमः शिवाय

श्रीशिवचालीसा

श्रीशिवप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्।

खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥
प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्धदेहं
सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥

प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं
वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम्।
नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥

प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति।
ते दुःखजातं बहुजन्मसंचितं हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः॥

❑ ❑

दोहा

अज अनादि अविगत अलख, अकल अतुल अविकार।
बंदौं शिव-पद-युग-कमल अमल अतीव उदार॥ १॥
आर्तिहरण सुखकरण शुभ भक्ति-मुक्ति-दातार।
करौ अनुग्रह दीन लखि अपनो विरद विचार॥ २॥
पर्‍यो पतित भवकूप महँ सहज नरक आगार।
सहज सुहृद पावन-पतित, सहजहि लेहु उबार॥ ३॥
पलक-पलक आशा भर्‍यो, रह्यो सुबाट निहार।
ढरौ तुरंत स्वभाववश, नेक न करौ अबार॥ ४॥

जय शिव शंकर औढरदानी।
जय गिरितनया मातु भवानी॥ १ ॥
सर्वोत्तम योगी योगेश्वर।
सर्वलोक-ईश्वर-परमेश्वर ॥ २ ॥
सब उर प्रेरक सर्वनियन्ता।
उपद्रष्टा भर्ता अनुमन्ता॥ ३ ॥

पराशक्ति-पति अखिल विश्वपति।
परब्रह्म परधाम परमगति॥ ४॥
सर्वातीत अनन्य सर्वगत।
निजस्वरूप महिमामें स्थितरत॥ ५॥
अंगभूति-भूषित श्मशानचर।
भुजंगभूषण चन्द्रमुकुटधर॥ ६॥

वृषवाहन नंदीगणनायक।
अखिल विश्वके भाग्य-विधायक॥ ७॥

व्याघ्रचर्म परिधान मनोहर।
रीछचर्म ओढे गिरिजावर॥ ८॥

कर त्रिशूल डमरूवर राजत।
अभय वरद मुद्रा शुभ साजत॥ ९॥

तनु कर्पूर-गौर उज्ज्वलतम।
पिंगल जटाजूट सिर उत्तम॥ १०॥

भाल त्रिपुण्ड्र मुण्डमालाधर।
गल रुद्राक्ष-माल शोभाकर॥ ११॥

विधि-हरि-रुद्र त्रिविध वपुधारी।
बने सृजन-पालन-लयकारी॥ १२॥

तुम हो नित्य दयाके सागर।
आशुतोष आनन्द-उजागर॥ १३॥
अति दयालु भोले भण्डारी।
अग-जग सबके मंगलकारी॥ १४॥
सती-पार्वतीके प्राणेश्वर।
स्कन्द-गणेश-जनक शिव सुखकर॥ १५॥

हरि-हर एक रूप गुणशीला।
करत स्वामि-सेवककी लीला॥ १६॥
रहते दोउ पूजत पुजवावत।
पूजा-पद्धति सबन्हि सिखावत॥ १७॥
मारुति बन हरि-सेवा कीन्ही।
रामेश्वर बन सेवा लीन्ही॥ १८॥

जग-हित घोर हलाहल पीकर।
बने सदाशिव नीलकंठ वर॥ १९ ॥

असुरासुर शुचि वरद शुभंकर।
असुरनिहन्ता प्रभु प्रलयंकर॥ २० ॥

'नमः शिवाय' मन्त्र पंचाक्षर।
जपत मिटत सब क्लेश भयंकर॥ २१ ॥

जो नर-नारि रटत शिव-शिव नित।
तिनको शिव अति करत परमहित॥ २२॥

श्रीकृष्ण तप कीन्हों भारी।
ह्वै प्रसन्न वर दियो पुरारी॥ २३॥

अर्जुन संग लड़े किरात बन।
दियो पाशुपत-अस्त्र मुदित मन॥ २४॥

भक्तनके सब कष्ट निवारे।
दे निज भक्ति सबन्हि उद्धारे॥ २५॥

शंखचूड़ जालन्धर मारे।
दैत्य असंख्य प्राण हर तारे॥ २६॥

अन्धकको गणपति पद दीन्हों।
शुक्र शुक्रपथ बाहर कीन्हों॥ २७॥

तेहि सजीवनि विद्या दीन्हीं।
बाणासुर गणपति-गति कीन्हीं॥ २८॥
अष्टमूर्ति पंचानन चिन्मय।
द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग ज्योतिर्मय॥ २९॥
भुवन चतुर्दश व्यापक रूपा।
अकथ अचिन्त्य असीम अनूपा॥ ३०॥

काशी मरत जंतु अवलोकी।
देत मुक्ति-पद करत अशोकी॥ ३१ ॥
भक्त भगीरथकी रुचि राखी।
जटा बसी गंगा सुर साखी॥ ३२ ॥
रुरु अगस्त्य उपमन्यू ज्ञानी।
ऋषि दधीचि आदिक विज्ञानी॥ ३३ ॥

शिवरहस्य शिवज्ञान प्रचारक।
शिवहिं परम प्रिय लोकोद्धारक॥ ३४॥

इनके शुभ सुमिरनतें शंकर।
देत मुदित ह्वै अति दुर्लभ वर॥ ३५॥

अति उदार करुणावरुणालय।
हरण दैन्य-दारिद्र्य-दुःख-भय॥ ३६॥

तुम्हरो भजन परम हितकारी।
विप्र शूद्र सब ही अधिकारी ॥ ३७ ॥

बालक वृद्ध नारि-नर ध्यावहिं।
ते अलभ्य शिवपदको पावहिं ॥ ३८ ॥

भेदशून्य तुम सबके स्वामी।
सहज सुहृद सेवक अनुगामी ॥ ३९ ॥

जो जन शरण तुम्हारी आवत।
सकल दुरित तत्काल नशावत॥ ४०॥

❑❑

दोहा

बहन करौ तुम शीलवश, निज जनकौ सब भार।
गनौ न अघ, अघ-जाति कछु, सब विधि करौ सँभार॥ १॥
तुम्हरो शील स्वभाव लखि, जो न शरण तव होय।
तेहि सम कुटिल कुबुद्धि जन, नहिं कुभाग्य जन कोय॥ २॥
दीन-हीन अति मलिन मति, मैं अघ-ओघ अपार।
कृपा-अनल प्रगटौ तुरत, करौ पाप सब छार॥ ३॥
कृपा-सुधा बरसाय पुनि, शीतल करो पवित्र।
राखौ पदकमलनि सदा, हे कुपात्रके मित्र!॥ ४॥

श्रीशिवाष्टक

आदि अनादि अनंत अखंड अभेद अखेद सुबेद बतावैं।
अलख अगोचर रूप महेस कौ जोगि-जती-मुनि ध्यान न पावैं॥
आगम-निगम-पुरान सबै इतिहास सदा जिनके गुन गावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो साम्ब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥ १॥
सृजन सुपालन-लय-लीला हित जो बिधि-हरि-हर रूप बनावैं।
एकहि आप बिचित्र अनेक सुबेष बनाइ कैं लीला रचावैं॥

सुंदर सृष्टि सुपालन करि जग पुनि बन काल जु खाय पचावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो साम्ब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥ २॥
अगुन अनीह अनामय अज अविकार सहज निज रूप धरावैं।
परम सुरम्य बसन-आभूषन सजि मुनि-मोहन रूप करावैं॥
ललित ललाट बाल बिधु बिलसै रतन-हार उर पै लहरावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो साम्ब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥ ३॥
अंग बिभूति रमाय मसानकी बिषमय भुजगनि कौं लपटावैं।

नर-कपाल कर मुंडमाल गल, भालु-चरम सब अंग उढ़ावैं॥
घोर दिगंबर, लोचन तीन भयानक देखि कैं सब थर्रावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो साम्ब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥ ४॥
सुनतहि दीनकी दीन पुकार दयानिधि आप उबारन धावैं।
पहुँच तहाँ अविलंब सुदारुन मृत्युको मर्म बिदारि भगावैं॥
मुनि मृकंडु-सुतकी गाथा सुचि अजहुँ बिग्यजन गाइ सुनावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो साम्ब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥ ५॥

चाउर चारि जो फूल धतूरके, बेलके पात औ पानि चढ़ावैं।
गाल बजाय कै बोला जो 'हरहर महादेव' धुनि जोर लगावैं॥
तिनहिं महाफल देय सदासिव सहजहि भुक्ति-मुक्ति सो पावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो साम्ब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥ ६ ॥
बिनसि दोष दुख दुरित दैन्य दारिद्र्य नित्य सुख-सांति मिलावैं।
आसुतोष हर पाप-ताप सब निरमल बुद्धि-चित्त बकसावैं॥
असरन-सरन काटि भवबंधन भव निज भवन भव्य बुलवावैं।

बड़भागी नर-नारि सोई जो साम्ब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥ ७॥
औढरदानि, उदार अपार जु नैकु-सी सेवा तें ढुरि जावैं।
दमन असांति, समन सब संकट, बिरद बिचार जनहि अपनावैं॥
ऐसे कृपालु कृपामय देव के क्यों न सरन अबहीं चलि जावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो साम्ब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥ ८॥

□ □

आरती

आरति परम साम्ब-शंकरकी।
सत्य सनातन शिव शुभकरकी॥

आदि, अनादि, अनन्त, अनामय।
अज, अविनाशी, अकल, कलामय।
सर्वरहित नित सर्व-उरालय।

मस्तक सुरसरिधर शशिधरकी।
आरति परम साम्ब-शंकरकी॥
कर्ता, भर्ता, जगसंहारी।
ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र तनुधारी।
सर्वविकाररूप अविकारी।
अग-जग-पालक प्रलयंकरकी।
आरति परम साम्ब-शंकरकी॥

विश्वातीत विश्वगत स्वामी।
द्रष्टा साक्षी अन्तर्यामी।
काम-काल सब-जग-हित कामी।
अनघ-स्वरूप सकल अघहरकी।
आरति परम साम्ब-शंकरकी॥
मुनि-मन-हरण मधुर शुचि सुंदर।
अति कमनीय रूप सुषमावर।

दिव्याम्बर रत्नाभूषणधर।
सर्व-नयन-मन-हर सुखकरकी।
आरति परम साम्ब-शंकरकी॥

विकट कराल पंचमुखधारी।
मुण्डमाल विषधर भयकारी।
हाथ कपाल श्मशान-बिहारी।

वेष अमंगल मंगलकरकी।
आरति परम साम्ब-शंकरकी॥
भोगी, योगी, ध्यानी, ज्ञानी।
जग-अभिमानाधार अमानी।
आशुतोष अति औढरदानी।
दैन्य-दुरित-दुर्गतिहर हरकी।
आरति परम साम्ब-शंकरकी॥

□□

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥ १॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥ २॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥ ३॥
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥ ४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥ ५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥ ६॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

□□